

यह आज का मुख्य समाचार है कृपया इसे प्रमुखता से प्रकाशित करने का प्रयास करावें।

सेठिया को समाजभूषण अलंकरण से नवाजा

आमेट के स्व. लक्ष्मीलाल ढीलीवाल और स्व. रो-नलाल सुराणा को श्रद्धानिष्ठ श्रावक का सम्मान, संबोधन अलंकरण समारोह में 135 समाजसेवियों का सम्मान

आमेट: 27 जनवरी

जैन :वेतामबर तेरापंथी महासभा की ओर से संबोधन अलंकरण समारोह का आयोजन आचार्यश्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में आयोजित हुआ। धर्म संघ के विकास के लिए आचार्य की दूरदर्शिता व साधु-संतों की त्याग-तपस्या रही है। वहीं श्रावक समाज का अनुकरणीय योगदान संघ और समाज के लिए रहा है। श्रावक समाज की सेवा भावना त्याग-तपस्या उज्ज्वल चरित्र का अंकन करते हुए आचार्यश्री ने इन 135 श्रावक-श्राविकाओं को वि-शे संबोधन से संबोधित किया। उनके सम्मान में महासभा की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। यहां अहिंसा समवसरण में शुक्रवार दोपहर को महासभा का सर्वोच्च सम्मान समाजभूषण अजात-त्रु सुजानगढ हाल दिल्ली निवासी मांगीलाल सेठिया और उपासक प्रवक्ता पुरस्कार धीसूलाल नाहर को दिया गया। साथ ही आमेट निवासी स्व. लक्ष्मीलाल ढीलीवाल व स्व. रो-नलाल सुराणा को श्रद्धानिष्ठ श्रावक का सम्मान दिया गया। प्रारंभ में व्यवस्था समिति के संयोजक धर्मचंद खाब्या ने स्वागत उद्बोधन दिया।

दोपहर एक बजे प्रारंभ इस समारोह में महासभा महामंत्री भंवरलाल सिंधी ने कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत की। इसके उपरांत मांगीलाल सेठिया को समाज के सबसे बड़े सम्मान समाजभूषण अलंकरण से महासभा अध्यक्ष चैनरुप चिंडालिया ने नवाजा। उन्हें स्मृति चिन्ह और प्र-स्ति पत्र प्रदान किया गया। इनके अलावा कोलकाता के भोजराज बैद, राजलदेसर के नोरतनमल बैद, नोखा के प्रेमसुख मरोठी, कोलकाता के रणजीतसिंह बैद, मोमासर के संपतमल संचेती, गुवाहाटी के विमलकुमार नाहटा तथा सुजानगढ के ताराचंद रामपुरिया को :ासनसेवी सम्मान से नवाजा गया। समारोह में आसींद के छगनलाल गोखरु, सेवन्त्री के स्व. धूलचंद कोठारी, जावद के ज्ञानचंद गोयल, गंगापुर के हस्तीमल गोखरु, दौलतपुरा के स्व. कन्हैयालाल डूंगरवाल, रीछेड के कुन्दनमल कोठारी, सायरा के मोहनलाल सोलंकी, आसींद के मदनलाल रांका, जावद के मदनलाल बीकानेरिया, मन्नालाल सामसुखा, पीपलांत्री के रो-नलाल मेहता, राजनगर के सुरे-चंद कावडिया, नाथद्वारा के :ांकरलाल सामोता, सायरा के सोहनलाल मेहता को श्रद्धानिष्ठ श्रावक और नाथद्वारा की अण्ठी देवी मूथा, केलवा की बदाम बाई कोठारी, उदयपुर की हुलासदेवी पोरवाल, मजेरा की कंचनदेवी मेहता, रीछेड की मदनदेवी कोठारी, राजनगर की नजरीदेवी मेहता, उदयपुर की रतनदेवी मुर्डिया, सायरा की

शान्तिबाइ कावडिया, नाथद्वारा की सायरदेवी गुन्देचा, मोलेला की संतोशदेवी बोहरा और नि-गोदा की संतोकबाई धाकड को श्रद्धा की प्रतिमूर्ति के सम्मान से नवाजा गया। इनके अलावा चार जनों को कल्याण मित्र, चार को तपोनिष्ठ, चार को महादानी, एक तत्वज्ञ श्राविका समेत 135 समाजजनों को समानित किया गया। इस अवसर पर महासभा के प्रधान ट्रस्टी राजेन्द्र बच्छावत भी उपस्थित थे। संयोजन महामंत्री भंवरलाल सिंधी ने किया।

उपवास करना भी आराधना: आचार्यश्री महाश्रमण

संयम से जीना चाहिए जीवन

आमेट: 27 जनवरी

तेरापंथ धर्म संघ के ग्यारहवें अधि-नास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने उपवास को एक तरह की साधना के रूप में प्रतिपादित करते हुए कहा कि यह धर्म की तरफ बढ़ने का एक संकेत है। उपासना करने से विभिन्न दोषों और कर्मों से निजात मिलती है। मनुष्य तप, आराधना, उपासना और ज्ञान अर्जन में तल्लीन रहता है और निर्जरा की दिशा में अग्रसर होता है उसे पुण्य का फल मिल सकता है। व्यक्ति प्रायः पुण्य के बदले सुख की कामना करता है। वह सुख तो भोग लेता है, लेकिन विकारों को अपने जीवन में निमंत्रण दे देता है। आचार्यश्री ने यह विचार यहां अहिंसा समवसरण में गुरुवार को दैनिक प्रवचन में दे-भर से समागत श्रावक-श्राविकाओं को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

आचार्यश्री ने कहा कि व्यक्ति को जीवन में त्याग और संयम की साधना के प्रति सदैव तल्लीन रहना चाहिए। साधना, ध्यान और आराधना की प्रक्रिया सतत् रहने से हमें आत्मानुभूति का अहसास होता है। एकाग्रचित्त होकर ध्यान-साधना करने से मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है, जो व्यक्ति आत्मीयता के बलबूते आराधना करता है उसे निर्वाण की प्राप्ति होती है। श्रावक-श्राविकाओं से आह्वान किया कि वे श्रेष्ठ संस्कारों को अपने जीवन में उतारकर सतत् धारा से उपासना करें और आगे बढ़ें। धर्म और समाज की ओर जाग्रत रहने से आत्मिक सुख की अनुभूति होती है। उन्होंने संबोधि के 12 वें अध्याय में उल्लेखित भगवान महावीर और उनके निश्चय मेघ के बीच के संवाद को प्रस्तुत करते हुए कहा कि साधु-संतों को भोजन कराने की प्रवृत्ति से व्यक्ति को धर्म में आगे बढ़ने का मौका मिलता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ भी कहा करते थे कि व्यक्ति को अपनी भौतिकतावादी संस्कृति में सेहत के मद्देनजर माह में दो-तीन उपवास करने का प्रयास करना चाहिए। मंत्री मुनि समेरमल ने भी विचार व्यक्त किए।

